# बच्चों के लिखना सीखने में भी सहायक हैं *बरखा* पुस्तकमाला की पुस्तकें

कमलेश चंद्र जोशी

पढ़ना और लिखना भाषा के बुनियादी कौशल हैं। इन्हें सीखकर बच्चों को अन्य विषयों को सीखने में मदद मिलती है। ये कौशल बच्चों के व्यक्तित्व को निखारने-सँवारने में महती भूमिका निभाते हैं। लेकिन बच्चों को समझ के साथ पढ़ना और लिखना सिखाना अभी भी एक बड़ी समस्या बनी हुई है। इस लेख में एक बालिका द्वारा *बरखा* पुस्तकमाला की किताबें पढ़ते हुए लिखी गई कहानी की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। लेख में बताया गया है कि बच्चों को उनके स्तर और रुचि की अच्छी किताबें पढ़ने को देने पर वे इनसे सहजता से जुड़ते हैं। वे भाषा की संरचना और घटनाओं की बुनावट को पकड़ते हैं, और लेखन में अपने अनुभवों और कल्पनाओं को विस्तार देते हैं। ये सारी बातें बच्चों के लेखन को पुख़्ता करती हैं। *बरखा* पुस्तकमाला, बच्चों के आम जीवन के इर्द गिर्द बुनी ऐसी ही कहानियों का पिटारा है। -सं.

उपयुक्त किताबें बच्चों के पढ़ना सीखने में बहुत मदद करती हैं। इसके अनुभव बहुत-से शिक्षक अपनी बातचीत में बताते रहते हैं। उनका कहना होता है कि अगर किताबें बच्चों के स्तर व रुचि की हों, उनसे बच्चे बहुत सहजता से जुड़ते हैं। इनपर बच्चों से बातचीत भी होती है। ऐसी ही कुछ किताबों के उदाहरण *बरखा* पुस्तकमाला में मिलते हैं। बच्चों को ये किताबें दिलचस्प लगती हैं। वे किताब की घटनाओं पर अपने अनुभव भी जोड़ते हैं। छोटे बच्चे इन किताबों के चित्रों को देखते हैं, अनुमान लगाते हैं, और किताबें पढ़ने की कोशिश करते हैं। इसमें सबसे अच्छी बात यह होती है कि बच्चे बताते हैं कि उन्होंने अभी तक कितनी किताबें पढ़ ली हैं, और उन्हें कौन-सी किताबें अच्छी लगती हैं? इसके माध्यम से वे पढ़ना भी सीखते हैं। ये किताबें बच्चों को लिखना सीखने में भी मदद करती हैं। बस, इसके लिए शिक्षक के पास पुस्तकों को योजनाबद्ध तरह से उपयोग करने की स्पष्टता होना ज़रूरी है।

हाल ही में इसका बहुत अच्छा अनुभव सुनने को मिला। पढ़ने-लिखने में दिलचस्पी रखने वाले शिक्षकों के व्हाट्सऐप समूह में जुड़ी एक शिक्षिका ने एक बच्ची का वीडियो समूह में साझा किया। उस वीडियों में देखने को मिला कि एक बच्ची दिवाली पर एक कहानी अपनी कक्षा में सुना रही थी। शिक्षिका ने बच्चों को अपनी कक्षा में यह कार्य दिया था कि वे दिवाली पर कोई कहानी बनाएँ, और उसे लिखें भी। जब उस कहानी को सुना गया तो लगा, इस कहानी की संरचना तो *बरखा* पुस्तकमाला की किताबों से हू-ब-हू मिल रही थी। मन में विचार आया कि बच्चे किस तरह से कहानियों की संरचना को पकड़ लेते हैं, और हमें पता भी नहीं चलता! ये ज़रूर है कि उसने *बरखा* पुस्तकमाला की किताबों को डूबकर पढ़ा है, और उसकी छाप उसके लिखने पर पड़ी है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि पढ़ने की प्रक्रिया लिखने को बहुत अच्छे से पुष्ट करती है। यहाँ ग़ौर करने वाली बात यह भी है कि बच्चों को कहानी लिखने

## दिवाली की कहानी

राहुल अपने घर की सफ़ाई कर रहा था।
और उसकी बहन भी सफ़ाई कर रही थी।
तभी उसका भाई बोला, "देखो माँ, मुझे अपनी पुरानी वाली गेंद मिल गई है।"
माँ ने कहा, "चलो, बहुत अच्छा! अब काम में लग जाओ। काजल, बरामदे में झाड़ू लगा दो।"
काजल बोली, "ठीक है।" वह बरामदे में चली गई।
झाड़ू लगाते हुए उसे अपनी पुरानी गुड़िया मिल गई।
वह ख़ुश हो गई। उसने यह बात अपनी माँ को बताई।
माँ ने कहा, "चलो, यह गुड़िया-गुड्डा हटाओ और काम करो। कल दिवाली भी तो है।"
आज दिवाली है। राहुल ने नए कपड़े पहने हैं, और काजल ने भी नए कपड़े पहने हैं।
तभी उनके दोस्त आ गए। उन्होंने काजल और राहुल को बुलाया और कहा, "चलो, पटाख़े फोड़ते हैं।"
उन्होंने कहा, "ठीक है।" तभी पटाख़ों की आवाज़ आने लगी।
पापा को लगा बच्चे पटाख़े फोड़ रहे हैं।
पापा रॉकेट लेकर आ गए। उन्होंने राहुल से कहा, "पटाख़े में आग लगा दो।"
राहुल बोला, "मुझे डर लगता है।"
पापा ने कहा, "चलो, मैं लगाता हूँ।"
पापा ने रॉकेट में आग लगा दी।
रॉकेट ऊपर गया।
माँ ने अपने फ़ोन से वीडियो बना लिया।
(इस लेखन में मात्राओं को ठीक किया गया है)

चाँदनी, कक्षा 4, राजकीय प्राथमिक विद्यालय कटघरिया, हल्द्वानी, ज़िला नैनीताल, उत्तराखंड

का कोई अभ्यास नहीं कराया गया था। मसलन, पहले यह लिखो और बाद में ऐसा लिखो, आदि।

अब चाँदनी की इस कहानी का विश्लेषण करें तो यह समझ में आएगा कि उसकी कहानी कोई सपाट कहानी नहीं है। इसमें कहानी के तत्त्व हैं, घटनाएँ हैं, क्रमबद्धता है, रोचकता है, भाषा है। कहानी के चरित्रों में राहुल है, उसकी बहन काजल है। काजल का पात्र चाँदनी ने *बरखा* की किताबों से ही लिया है। इसके साथ ही उसके मम्मी-पापा हैं। मम्मी-पापा *बरखा* पुस्तकमाला की कई किताबों में मौजूद हैं। दिवाली का त्योहार, त्योहार के पहले की साफ़-सफ़ाई, पटाख़े, बच्चों के दोस्त, आदि सबको लेकर कथावस्तु रची गई है। कहानी को रोचक बनाने के लिए बीच-बीच में कुछ घटनाएँ होती हैं, जहाँ राहुल को सफ़ाई करते-करते अपनी पुरानी गेंद मिल जाती है, और झाड़ू लगाते हुए काजल को अपनी गुड़िया। ऐसा बच्चों के जीवन में कई बार होता है जब बच्चों को बहुत दिनों बाद अपनी गुम हुई चीज़ें एकाएक मिल जाती हैं, और उनको बहुत ख़ुशी मिलती है। यह हमने भी अपने बचपन के अनुभवों में महसूस किया होगा। काजल जब अपनी खोई हुई गुड़िया अपनी माँ को दिखाती है। माँ कहती है कि चलो, यह गुड़िया-गुड्डा हटाओ और अपना काम करो। कल दिवाली है। यहाँ लग रहा है कि माँ भी अपने कामों में बहुत व्यस्त है। ऐसा अमूमन बच्चों के साथ होता रहता है। इसी तरह से घर की साफ़-सफ़ाई का काम होता है।

इस घटना के उपरान्त दिवाली के दिन दूसरी घटना कहानी में आती है जब उनके दोस्त उनके घर आते हैं, और उनसे साथ मिलकर पटाख़े फोड़ने को कहते हैं। इसके बाद पापा रॉकेट लेकर आते हैं, और राहुल से कहते हैं कि तुम रॉकेट में आग लगा दो। राहुल कहता है कि उसे डर लगता है, तब उसके पापा रॉकेट जलाते हैं। इसके साथ उसने कहानी का जो अन्त किया है उसमें उनकी माँ उसके पिता का रॉकेट छोड़ने का वीडियो बनाती है, जैसा आज के रोज़मर्रा के जीवन में आमतौर पर हम सभी को दिखाई ही देता है। यहाँ पर कहानी एक ख़ुशनुमा मोड़ पर पूरी होती है।

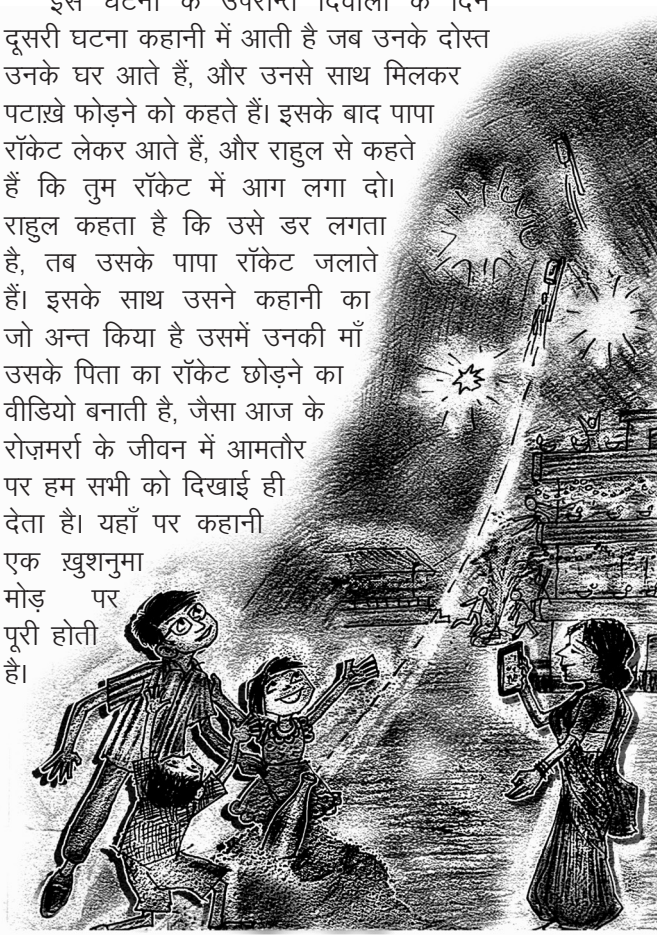

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

यह कहानी बच्चों के आम जीवन के अनुभवों के आधार पर ही लिखी गई है, और घटनाएँ बच्चों के जीवन से जुड़ी हुई हैं। कहानी में ग़ौर करने की बात यह है कि कहानी में आए बहुत-से वाक्य *बरखा* पुस्तकमाला की किताबों के वाक्यों जैसे ही लगते हैं जिन्हें बच्ची ने इन किताबों को पढ़ते हुए मन-ही-मन कब अंकित कर लिया उसे पता भी नहीं चला, और लिख भी दिया। यहाँ हमें चोम्स्की और बच्चों के भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता ध्यान में आती है। इसमें कहा जाता है, "भाषा सीखी नहीं जाती, पकड़ी जाती है।"

बच्ची के इस लेखन में हम यह भी देखेंगे कि इस कहानी को जिस तरह से उसने विजुलाइज़ किया है, उसका फ़ॉर्मेट एक चित्रकथा का बन रहा है। यहाँ बच्ची जो वाक्य बोल रही है मन-ही-मन वह शायद यह भी सोच रही है कि इसके साथ इसका यह चित्र भी होगा जिसमें यह-यह हो रहा होगा। जैसा *बरखा* पुस्तकमाला की किताबों में है, कहानी में एक शुरुआत है, बीच में कुछ घटनाएँ हैं जो कहानी को बाँधे हुए हैं व रोचकता भी लाती हैं, फिर एक अन्त है, कुछ नए शब्द भी हैं। इसमें एक बात थोड़ी खटकती है। जब राहुल को पुरानी गेंद मिलती है तब तो मम्मी कहती हैं, "चलो, बहुत अच्छा! अब काम पर लग जाओ।" पर जब काजल कहती है कि गुड़िया मिली है, मम्मी कहती हैं, "चलो, यह गुड़िया-गुड्डा हटाओ और अपना काम करो। कल दिवाली है।" शायद वह भी काम में बहुत व्यस्त होंगी इसलिए ऐसा बोला होगा। हम कह सकते हैं कि उन्होंने काजल को ऐसा क्यों बोल दिया होगा, जबकि राहुल को नहीं बोला। इसी तरह हम यह भी कह सकते हैं कि कहानी में पटाख़े फोड़ने व रॉकेट छोड़ने की बात आई। यह पर्यावरण के लिए ठीक नहीं है। इन मुद्दों पर बच्चों से बात की जा सकती है। अभी तो बच्ची के द्वारा कहानी बनाने की प्रक्रिया पर हम ग़ौर कर रहे हैं। यह कहानी उन बच्चों की है जो शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ते हैं। उन्हीं का जीवन है। वही बच्चे *बरखा* पुस्तकमाला की किताबों में भी हैं। इन्हीं रोज़मर्रा के अनुभवों को चाँदनी ने पकड़ा है।

चाँदनी की लिखी इस कहानी को पढ़कर पता चलता है कि बच्चे *बरखा* पुस्तकमाला की किताबों को पढ़कर पढ़ना तो सीख ही रहे हैं, साथ ही उसमें वे अपने अनुभव व कल्पना को जोड़ते हैं, उनसे कई और कहानियाँ बनती रहती हैं। इस तरह कहानियों पर काम करते हुए बच्चे स्वत: ही पढ़ने के साथ लिखना भी सीख रहे होते हैं। ऐसी प्रक्रियाओं पर शायद हम शिक्षक की भूमिका में उतना ग़ौर नहीं कर पाते। अगर हम ग़ौर करें, हमें बच्चों की बुनियादी साक्षरता के बारे में बहुत-सी बातें और पता चलेंगी जिन्हें हम शिक्षक प्रशिक्षण में कुछ-कुछ सुनते रहते हैं या लेखों में पढ़ते हैं। इनसे हमारी समझ और पुख़्ता होगी।

चाँदनी के अलावा कक्षा में और बच्चों के लेखन के नमूने भी समय-समय पर देखने को मिलते हैं। कुछ बच्चे केवल चित्रों या किसी

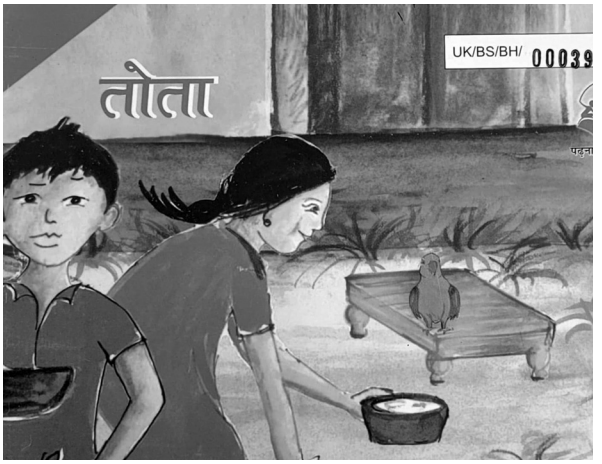


विषय के आधार पर कुछ वाक्य लिखते हैं। कुछ बच्चों के लेखन में उनके अनुभव लिखे हुए मिलते हैं। हालाँकि, उनमें अभी पूर्णता नहीं दिखाई पड़ती, और वाक्यों का भी दोहराव होता है। इसी तरह, कुछ के लेखन में कुछ सुनी-सुनाई कहानियाँ दिखाई पड़ती हैं। लेकिन लिखते सभी हैं। इस सबसे यह समझ में आता है कि बच्चों को लिखने के लिए प्रोत्साहित करने में शिक्षक की भूमिका बेहद महत्त्वपूर्ण होती है। वे बच्चों के साथ किसी विषय पर कितनी बात करते हैं, और कितना उन्हें सोचने का मौक़ा देते हैं। इसके साथ शिक्षकों का अन्य किताबों को पढ़ना, और उनपर बात करना भी ज़रूरी होता है। सबसे महत्त्वपूर्ण होता है, बच्चों के लिखे हुए पर बात करना, और आगे बेहतर करने के लिए सुझाव देना। इससे बच्चे लिखना सीखने की प्रक्रिया में आगे बढ़ते हैं।

*बरखा* पुस्तकमाला की किताबों पर बच्चों से बात करते हुए उसमें कई ऐसे ठीहे मिलते हैं जहाँ बच्चे उसमें अपने अनुभव जोड़ते हैं। वहाँ उन्हें लिखने को प्रोत्साहित किया जा सकता है। जैसे– *तोता* और *मोनी* किताब को पढ़ते हुए बच्चे अपने आसपास के पशु-पक्षियों की सेवा-सुश्रुषा के बहुत-से अनुभव बताते हैं कि उन्होंने किसी पिल्ले, कबूतर, बिल्ली, तोते जैसे पशु-पक्षी की कैसे मदद की; वह कहाँ मिला था; आदि। इसी तरह *मिली की साइकिल* किताब को पढ़ते हुए बच्चे अपने साइकिल सीखने के अनुभव बताते हैं कि कैसे उन्होंने साइकिल चलाना सीखा; उन्हें किसने सिखाया; आदि, और *पका आम* किताब को पढ़ते हुए वे अपने आस-पड़ोस के पेड़ों से आम, अमरूद व जामुन तोड़ने के अनुभव बताते हैं। इन सबसे नई कहानियाँ पैदा होती हैं। इन्हें आगे 'लर्नर जेनरेटेड टेक्स्ट' का रूप दिया जा सकता है, और उनके लिए सामग्री बनाई जा सकती है। यहाँ आवश्यकता होती है बच्चों के साथ उनके अनुभवों पर धैर्य के साथ बात करने और उन्हें लिखने के मौक़े देने की। इससे कक्षा अर्थपूर्ण बनेगी। अगर इस तरह के मौक़े बच्चों को दिए जाते हैं, उनमें रचनात्मक लिखने की प्रवृत्ति विकसित होगी, और उनके लिखने के कौशल में भी सुधार देखने को मिलेगा। अभी कई सरकारी, ग़ैर-सरकारी अध्ययनों में दिखाई पड़ता है कि बच्चे अभी भी समझ के साथ पढ़ने व लिखने में भी पिछड़े हुए हैं। अन्त में, यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि पढ़ना और लिखना बुनियादी कौशल हैं। ये स्कूल ही नहीं, जीवन में भी बच्चे की सफलता का आधार हैं। ये साथ-साथ ही सीखे जाते हैं और एक दूसरे को पुष्ट करते हैं।

**इस लेख को लिखने के लिए भावना पाण्डेय, सहायक अध्यापिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय कटघरिया, हल्द्वानी, नैनीताल द्वारा प्रेषित सामग्री से प्रेरणा मिली है। उनका बहुत आभार।**

कमलेश चंद्र जोशी प्राथमिक शिक्षा से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों– शिक्षक शिक्षा, बाल साहित्य, प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता आदि में गहरी रुचि। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर में कार्यरत।

सम्पर्क : kamlesh@azimpremjifoundation.org